Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) ____________________

   (Name) ____________________

2. (Signature) ____________________

   (Name) ____________________

Roll No. | | | | | | | | |

(In figures as per admission card)

Roll No. ____________________

(In words)

Test Booklet No.

J – 2509

PAPER – III

SANSKRIT

Time : 2½ hours] **[Maximum Marks : 200**

Number of Pages in this Booklet : **40** Number of Questions in this Booklet : **26**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answers to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Test Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the question booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the Test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc. is prohibited.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुये रिक्त स्थान पर ही लिखिये।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी। पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी सील को फाड़ लें। खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं। दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले ले। इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे। उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें।
8. **केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पैन का ही इस्तेमाल करें।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है।**

SANSKRIT

संस्कृत

PAPER—III

प्रश्नपत्रम् - III

NOTE: This paper is of two hundred (200) marks containing four (4) sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein. All questions should be attempted in Sanskrit language.

नोट : यह प्रश्नपत्र दो सौ (200) अंकों का है एवं इसमें चार (4) खंड हैं। अभ्यर्थियों को इनमें समाहित प्रश्नों का उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है।

सूचनाः - अस्य प्रश्नपत्रस्य द्विशतम् (200) अङ्का सन्ति प्रश्नपत्रमिदं चतुर्षुखण्डेषु विभक्तमस्ति। सर्वेषां प्रश्नाना-मुत्तरं संस्कृतभाषायामेव देयम्। परीक्षार्थिभिः पृथङ्‌निर्दिष्ट-विशेषसूचनानुसारं खण्डान्तर्गतप्रश्नाः समाधेयाः।

खण्डः – I

सूचनाः - अस्मिन् खण्डे निम्नलिखितं गद्यभागमाश्रित्य पञ्च (5) प्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य प्रायशः त्रिंदश (30) शब्दात्मकं उत्तरं देयम्। एकैकस्य प्रश्नस्य कृते पञ्च (5) अङ्काः सन्ति।

(5X5 =25 अङ्काः)

कदाचिदपि वर्षासु वृष्टेरभावात् तृषार्तो गजयूथो यूथपतिमाह – नाथ, कोऽभ्युपायोऽस्माकं जीवनाय? नास्ति क्षुद्रजन्तूनां निमज्जनस्थानम्। वयञ्च निमज्जनस्थानाभावान्मृतार्हा इव। किं कुर्मः? क्व यामः? ततो हस्तिराजो नातिदूरं गत्वा निर्मलं ह्रदं दर्शितवान्। ततो दिनेषु गच्छत्सु तत्तीरावस्थिता गजपादाहतिभिश्चूर्णिताः क्षुद्रशशकाः। अनन्तरं शिलीमुखो नाम शशकश्चिन्तयामास – अनेन गजयूथेन पिपासाकुलितेन प्रत्यहमत्रागन्तव्यम्। अतो विनश्यत्यस्मत्कुलम्। ततो विजयो नाम वृद्धशशकोऽवदत् – मा विषीदत। मयात्र प्रतीकारः कर्तव्यः। ततोऽसौ प्रतिज्ञाय चलितः। गच्छता च तेनालोचितम् – कथं गजयूथसमीपे स्थित्वा वक्तव्यम्।

यतः — स्पृशन्नपि गजो हन्ति जिघ्रन्नपि भुजङ्गमः।
पालयन्नपि भूपालः प्रहसन्नपि दुर्जनः।।

1. गजयूथः कमाह? किञ्चाह?

2. हस्तिराजेन किं कृतम्? तेन किमभवत्?

3. शिलीमुखः कः, तेन किं चिन्तितम्?

4. वृद्धशशकः कः, तेन किमुक्तम् ?

5. अन्तिमपद्यस्य किं तात्पर्यम् ?

खण्डः – II

सूचनाः - **अस्मिन् खण्डे पञ्चाङ्कपरिमिताः पञ्चदशप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य प्रायशः त्रिंदश (30) शब्दात्मकम् उत्तरं देयम्।**

(5X15 = 75 अङ्काः)

6. पृथिवीसूक्तमधिकृत्य मानवस्य कर्तव्यं विमृशत।

7. ब्राह्मणग्रन्थस्य दशलक्षणानि विलिख्य तानि सोदाहरणं विवेचयत।

8. वैदिकलौकिकसंस्कृतयोः वैशिष्ट्यं समीक्षताम्।

9. वाङ्मनसोः आख्यानस्य दार्शनिकः पक्षः विविच्यताम्।

10. 'रक्षोहागमलध्वसन्देहाः प्रयोजनम्' इत्यस्य व्याख्यां कुरुत।

11. अर्थपरिवर्तनस्य कारणानि सोदाहरणं वर्णयत।

12. वेदान्तसारानुसारमधिकारिणो विवेचनं कुरुत।

13. उत्पत्तिविधेः सोदाहरणं विवेचनं कुरुत।

14. राष्ट्रनिर्माणे रामायणस्य महत्त्वं सम्यग् विमृशत।

15. विदुलोपाख्यानस्य महत्त्वं प्रतिपादयत।

16. याज्ञवल्क्यस्मृतिमनुस्टसृत्य विभाजनं विशदयत।

17. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गानुसारं द्रुपदात्मजाया: सम्भाषणसारं विलिखत।

18. आनन्दवर्धनाचार्यानुसारं प्रतीयमानार्थस्य वैशिष्ट्यं निरूपयत।

19. नाट्यशास्त्रमनुसृत्य वीररसस्य प्रभेदान् विवृणुत।

20. न्यायवैशेषिकमते प्रमाता कः ? सोदाहरणं विशदयत।

खण्डः – III

सूचनाः - **अस्मिन् खण्डे एकैकस्मिन् ऐच्छिकविषये पञ्च पञ्च प्रश्नाः सन्ति। एकम् ऐच्छिकविषयं चित्वा परीक्षार्थिना तस्य पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः। एकैकस्य प्रश्नस्य द्वादश (12)अङ्काः सन्ति, उत्तरं तावत् प्रायशः द्विशत (200) शब्दात्मकं लेखनीयम्।**

(12x5=60 अङ्काः)

ऐच्छिकः – I

21. वरुणसूक्तमधिकृत्य पर्यावरण संरक्षणे महत्त्वं विमृश्यताम्।

22. समृद्धराष्ट्रनिर्माणे राष्ट्राभिवर्द्धनसूक्तस्य योगदानं विमृश्यताम्।

23. तैत्तरीय–माध्यन्दिनसंहितयोः स्वरूपगतभेदं सोदाहरणं विवेचयत।

24. अघोषः। सोष्मः। यमः। संयोगः।
एषां सोदाहरणं विवेचनं प्रस्तूयताम्

25. ''एवमुच्चावच्चेष्वर्थेषु ऋषीणां मन्त्रदृष्ट्यो भवन्ति'' सन्दर्भस्यास्य विवेचनं प्रस्तूयताम्।

ऐच्छिकः – II

21. शब्दार्थयोः सम्बन्धस्य विषये भर्तृहरेः मतं किम्? सम्यक् विवेचनं कुरुत।

22. बहुव्रीहिसमासस्य अन्यपदार्थप्रधानताविषयं सोदाहरणं निरूपयत।

23. सूत्रोल्लेखपूर्वकं समासप्रक्रियां लिखत —

शङ्कुलाखण्डः, कष्टश्रितः, नीलकमलम्, उपकृष्णम्

24. परस्मैपदविधायीनि त्रीणि सूत्राणि लिखित्वा सोदाहरणं व्याख्यानं कुरुत।

25. कवर्गादारम्य पवर्गपर्यन्तं वर्णानां उच्चारणस्थानानि लिखत।

ऐच्छिकः – III

21. योगसूत्रव्यासभाष्यमनुस्टत्य यमनियमासनानि विवेचयत।

22. ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यानुसारं ब्रह्मसिद्धिंकुरुत।

23. न्यायवैशेषिकानुसारम् अनुमान प्रमाणभेदान् प्रदर्शयत।

24. जैनदर्शनमनसृत्य महाव्रतपञ्चकं प्रतिपादयत।

25. बौद्धदर्शनदृष्ट्या क्षणभङ्गवादं निरूपयत।

ऐच्छिकः – IV

21. काव्यप्रकाशानुसारं गुणीभूतव्यंग्य प्रभेदान् सोदाहरण विवेचयत।

22. कुन्तकोक्तदिशा कविव्यापारवक्रत्वप्रकारान् सोदाहरणं निरूपयत।

23. राजशेखरानुसारं काव्यपुरुषस्वरूपं वर्णयत।

24. जगन्नाथस्य काव्यकारणनिरूपणवैशिष्ट्यं विवेचयत।

25. काव्यलक्षणविषये जगन्नाथस्य विलक्षणत्वं प्रतिपादयत।

ऐच्छिकः – V

21. भारते लेखनकलाया उद्भवं लिखत।

22. मन्दसौरशिलालेखस्य साहित्यिकं महत्त्वं प्रतिपादयत।

23. समुद्रगुप्तकृतस्य प्रयागस्तम्भलेखस्य वैशिष्ट्यं प्रतिपादयत।

24. पुलकेशिद्वितीयस्य एहोलशिलालेखस्य परिचयो देयः।

25. धरसेनद्वितीयस्य मालियाताम्रपट्टाभिलेखस्य महत्त्वं विशदयत।

खण्डः – IV

सूचनाः - अस्मिन् खण्डे चत्वारिंदश (40) अङ्कपरिमितः निबन्धात्मकप्रश्नः अस्ति। अधोनिर्दिष्टविषयेषु एकमाश्रित्य प्रायशः (1000) सहस्रशब्दपरिमितम् उत्तरं प्रदेयम्।

(40X1= 40 अङ्काः)

26. अथर्ववेदस्य विषयवैशिष्ट्यम्

अथवा

वेदव्याख्यापद्धतयः

अथवा

यथोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम्

अथवा

प्रक्रियापद्धतेः वैशिष्ट्यम्

अथवा

सत्कार्यवादः

अथवा

योगाङ्गानि

अथवा

काव्यप्रभेदसमीक्षा

अथवा

रसनिष्पत्तिः

अथवा

अशोकस्य प्रमुखाः स्तम्भलेखाः

अथवा

लिपीनामुपयोगः

FOR OFFICE USE ONLY							
Marks Obtained							
Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained
1		26		51		76	
2		27		52		77	
3		28		53		78	
4		29		54		79	
5		30		55		80	
6		31		56		81	
7		32		57		82	
8		33		58		83	
9		34		59		84	
10		35		60		85	
11		36		61		86	
12		37		62		87	
13		38		63		88	
14		39		64		89	
15		40		65		90	
16		41		66		91	
17		42		67		92	
18		43		68		93	
19		44		69		94	
20		45		70		95	
21		46		71		96	
22		47		72		97	
23		48		73		98	
24		49		74		99	
25		50		75		100	

Total Marks Obtained (in words) ....

(in figures) ....

Signature & Name of the Coordinator ....

(Evaluation) Date ....